1

iLrkouk

भारत एक विशाल देश होने के साथ–साथ विकासशील देश भी माना जाता है। क्योंकि यहां पर हर जाति हर वर्ग के लोग एक साथ मिलकर देश को आजाद करवाने के बाद रह रहे हैं। भारत में रहने वाले हर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, बौद्ध, जैन व अन्य धर्म के लोग अपने आप को भारतीय कहते हैं। भारत में आने वाले विपत्तियों में भी वे एक साथ मिलकर उसका सामना करते है।

भारतीय समाज मूलरूप से एक ग्रामीण और कृषक समाज है। अतीत काल से लेकर अब तक भारतीय ग्रामीण समुदाय की निरन्तर और स्थायित्व इसकी प्रमुख विशेषता रही है। भारतीय जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग ग्रामीण क्षेंत्र में निवास करता है तथा भारतीय संस्कृति की अक्षुणता और प्रभावशीलता का एक प्रमुख कारण ग्रामीण समुदाय और उसकी परम्परागत संरचनात्मक विशेषताएं रही हैं। भारतीय ग्राम एक भौतिक तथ्य या परिस्थितिकीय इकाई नही बल्कि एक सामाजिक वास्तविकता रही है। भारतीय समाज और संस्कृति का अन्वेषण करने वाले विचारको और शोधकर्ताओं के लिए भारतीय ग्रामीण समुदाय अध्ययन की एक प्रमुख तथा आधार–भूत इकाई रहे हैं।

भारतीय ग्रामीण समाज के सन्दर्भ में परम्परागत धारणा इसे एक आत्मनिर्भर इकाई के रूप में अवलोकित करना है। प्रारम्भिक विचारको जैसे–*eVdkQ] eu] oMu ikoy vkj dkyekDl* ने भारतीय ग्रामीण समाज को एकाकी अपरिवर्तनशील और केन्द्रित इकाई माना है। ब्रिटिश विचारक सरचार्ल्स मेटकाफ के अनुसार भारतीय ग्राम एक स्वतः चलित लघुगणराज्य है। उनके अनुसार ग्रामीण समुदाय पूर्णतया आत्मनिर्भर रहा है। वाह्य समाज से उसका कोई सम्पर्क नही रहा है। शेष सभी वस्तुंए परिवर्तित रही है परन्तु ग्रामीण समुदाय स्थिर रहे है। राजवंशों का उत्थान पतन होता रहा है। क्रान्ति के पश्चात् क्रान्ति होती रही, तथापि ग्रामीण समुदाय पहले जैसे ही बने रहे।

स्वतन्त्रता संग्राम के समय महात्मा गांधी ने ग्रामीण समुदाय की आत्मनिर्भरता, नैतिक और आर्थिक समग्रता एवं वृहद् भारतीय संरचना के एक सावयवी अंग के रूप में स्वीकार करके भारतीय ग्रामीण समुदाय के परम्परागत दृष्टिकोण का समर्थन किया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी राष्ट्रीय पुननिर्माण नियोजन और राजनीतिक जागरूकता से सम्बन्धित कार्यक्रमो के निर्धारण में भी भारतीय ग्रामीण समुदाय को एक आधार भूत इकाई माना गया है।

वर्तमान समय में समाजशास्त्रियों और सामाजिक मानवशास्त्रियों ने भारतीय ग्रामीण समुदाय का जो अध्ययन किया है। उससे यह विदित होता है कि भारतीय ग्रामीण समुदाय

एक स्वतः चलित गणतन्त्र या आत्मनिर्भर इकाई नही रहे। अपितु ग्रामीण समुदाय सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से वृहद् भारतीय संस्कृति का एक अंग रहा है।

साथ ही साथ भारतीय ग्रामीण समुदाय की एक स्थिर सत्ता भी नही रही है। समय के परिवर्तन के साथ–साथ भारतीय ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन होता रहा है। परिवर्तन के कारक न केवल अन्तर्मुखी रहे है। बल्कि बहिर्मुखी कारकों ने भी भारतीय ग्रामीण समुदाय में परिर्वतन उत्पन्न किया है। भारतीय ग्रामीण समुदाय वृहद परम्परा और व्यापक समाजिक व्यवस्था का एक अंग रहा है। तो दूसरी ओर क्षेत्रीय संस्कृति या लोक परम्परा का प्रतिनिधित्व भी इसके द्वारा होता है। परिणामस्वरूप भारतीय ग्रामीण समुदाय का अध्ययन व्यापक संरचनात्मक विशेषताओं से पृथक करके नही किया जा सकता और न ही इसकी स्थानीय एंव लघु परम्परागत विशेषताओं की ही अवहेलना की जा सकती है।

विकासवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए ये अवधारणाएं यह मानती हैं कि सभ्यता या परम्पराओं की संरचना का विकास दो स्तरों में होता है। प्रथम स्तर में आंतरिक या अन्तर्मुखी विकास के द्वारा तथा द्वितीय स्तर में वाह्य या बहिर्मुखी सम्पर्क के द्वारा सभ्यता या परम्पराएं दो स्तरों पर सामूहिक जीवन को प्रभावित करती हैं। प्रथम चरण में इसका प्रभाव अशिक्षित कृषकों या लोक संस्कृति पर पड़ता है तथा द्वितीय चरण में शिक्षित या अभिजात वर्ग के व्यक्तियों को प्रभावित करती हैं। प्रथम चरण की सांस्कृतिक प्रक्रिया को लघु परम्परा और द्वितीय चरण की सांस्कृतिक परम्परा को वृहद परम्परा कहते हैं। परम्पराओं के इन दोनो स्तरों में निरन्तर अन्तः क्रिया होती रहती है। सभ्यता या संस्कृति व एकता का निर्माण, समान जीवन दृष्टि, समान संस्कारों और समान संस्थाओं के द्वारा होता है। परम्पराओं या संस्कृतियों में परिवर्तन अन्तर्मुखी और वाह्य सांस्कृतिक कारकों के पारस्परिक अन्तःक्रिया के द्वारा होता है तथा विभिन्नता की उत्पत्ति स्थानीय या लोक परम्पराओं के द्वारा होती है। परिवर्तन की दिशा अन्तर्मुखी परम्पराओं से बहिर्मुखी परम्पराओं की ओर होती है।

अंग्रेजी शासन के कारण भारतीय समाज और संस्कृति में बुनियादी और स्थायी परिवर्तन हुए। यह काल भारतीय इतिहास के पिछले सभी कालों से भिन्न था। क्योंकि अंग्रेज अपने साथ नई औद्योगिकी, संस्थाएं ज्ञान विश्वास और मूल्य लेकर आये थे। नई औद्योगिकी नीति और उसके कारण संचार साधनो में होने वाली क्रान्ति की सहायता से अंग्रेजों ने देश का ऐसा एकीकरण किया जैसा पहले उसके इतिहास में कभी नही हुआ था। अंग्रेजी राज्य की स्थापना से स्थानीय लड़ाईयां सदा के लिए खत्म हो गयीं, जो अंग्रेजो से पहले भारत में निरन्तर चलती रहती थीं। उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों ने धीरे–धीरे भूमि का सर्वेक्षण करके राजस्व निर्धारित किया आधुनिक अधिकारी तन्त्र सेना पुलिस की स्थापना की। अदालतें स्थापित करके कानून की संहिताएं बनाई, संचार साधनों–रेलों, डाक और तार सडकों और

नहरों का विकास किया, स्कूलों एवं कालेजों की स्थापना की और इन सबके द्वारा आधुनिक राज्य की नींव डाली।

आधुनिकता एवं आधुनिकीकरण भारत के लिए कोई नही बात नही है वरन् इसकी नींव उस समय रखी जा चुकी थी, जब राजा राम मोहन राय ने सुधार और नवीन सामाजिक विधानों के द्वारा इस देश की परम्परात्मक सामाजिक बुराईयों को दूर करने के प्रयत्न किये। सन् 1834 में बम्बई में एल्फिन्स्टान कालेज की स्थापना हुई और इस वर्ष 'दी टाइम्स ऑफ इन्डिया' नामक समाचार पत्र प्रारम्भ हुआ तब से लेकर अब तक भारत आधुनिकता की ओर सतत अग्रसर हो रहा है। अब मनु द्वारा उल्लेखित हिन्दू परम्पराएं क्षीण हो रही हैं। सतीप्रथा समाप्त हो गयी है विधवाएं अब पुर्नविवाह करने लगी हैं। बाल विवाहों की संख्या घटी है जाति का लौकिकीकरण हो रहा है तथा खान–पान के नियमों में शिथिलता आयी है।

b tUl VkM ने अपनी पुस्तक 'मोडर्नाइजेशन–प्रोटेस्टएण्ड चेन्ज' में आधुनिकीकरण की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि ''प्रगति आधुनिकीकरण की प्रमुख विशेषता है।'' आधुनिकीकरण के द्वारा आर्थिक क्षेत्र में उच्च स्तर की तकनीकी का विकास होता है। आधुनिक समाजों में कार्यों एवं व्यवसायों में भर्ती व्यापक रूप में उपलब्धि के आधार पर की जाती है, जब कि परम्परागत ग्रामीण समाजों में संप्राप्ति पद्धति प्रमुख थीं राजनैतिक क्षेत्र में आधुनिकता, समाज के विस्तृत समूहों में सम्भावित सत्ता के निरन्तर विस्तार से परिभाषित की जाती है। जो उनके समस्त वयस्क नागरिकों के पास पहुंचती है। समस्त आधुनिक ग्रामीण समाज कुछ स्तर तक प्रजातांत्रिक है। यह प्रगति विशेषकर संचार के माध्यमों के विस्तार से सम्बन्धित है।

'आधुनिकीकरण की अवधारणा को सामान्यतः परम्परा के साथ समझा जाता है। परम्परा और आधुनिकीकरण की अवधारणाएं परस्पर विरोधी अवधारणाएं समझी जाती हैं। परम्परा उसे कहा जाता है जो बहुत समय से चली आने वाली किसी परिपाटी की ओर संकेत करती है इसलिए यह आधुनिकता की विरोधी होती है। परम्परा के सामान्यतः उन्ही मूल्यों को स्वीकार किया जाता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चले आते हैं अथवा उनका पालन इसलिए किया जाता है कि बीते हुए समय में भी उसका पालन किया जाता रहा है। डॉ0 डी0पी0 मुकर्जी ने लिखा है कि अंग्रेजी के शब्द 'ट्रेडीशन' की व्युत्पत्ति 'ट्राडेरो' से हुई है और इसका आशय है 'एक दूसरे को देना' संस्कृत में इसका अर्थ समानार्थी परम्परा है। यहां परम्परा एक अनुक्रम अथवा इतिहास है परम्पराओं के स्त्रोत धार्मिक ग्रन्थ, साधुओं और महात्माओं के उपदेश कपोल–कल्पित कथाओं के महापुरूष आदि होते हैं। राधाकृष्ण मुकर्जी ने लिखा है कि परम्परा एक भूला हुआ तथ्य है जिसे जनता पीढ़ी दर पीढ़ी ग्रहण करती रहती है। प्रत्येक समाज में असंख्य जनरीतियां, प्रथाएं एव रूढ़िया आदि होती हैं। इन जनरीतियों, प्रथाओं, रूढ़ियों एंव मान्यताओं का हस्तान्तरण समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को समाजीकरण की प्रक्रिया के

द्वारा होता है तथा होता रहता है। प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिए यह अनिवार्य है। इन परम्पराओं को विवेचना के द्वारा समझा जाए। भारत को अधिकांश विद्धान एक परम्पराओं का राष्ट्र मानते हैं। भारत में अनेक धर्म सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। यहाँ परम्पराएं भी विभिन्न धर्मों के अनुसार पृथक पृथक हैं। भारतीय समाज में पाये जाने वाले अनेक धर्मों ने अपनी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को अपने अपने ढ़ंग से विकसित किया है। भारतीय धर्मों के धर्मावलम्बियों में धार्मिक परम्पराओं का एक सुन्दर समन्वय क्षेत्रीय संस्कृति के विकास से कुछ सामान्य विशेषताओं का विकास हुआ जैसे–जाति, संयुक्त परिवार, ग्रामीण जीवन शैली तथा बन्धुत्व के स्वीकृत आदर्श नियमों और प्रतिमानों में दृष्टिगत होते हैं। इनके अतिरिक्त भारतीय परम्परा में पवित्रता, अपवित्रता, सास्कृतिक रीतिरिवाजों, कर्मकाण्डीय प्रतिमानों, अनुष्ठानों, विश्वासों की धार्मिक व्यवस्थाएं आदि भी व्यापक रूप से दिखाई देती हैं।

आधुनिकता का संक्षिप्त आशय है 'आधुनिक होना'। परम्परा के विपरीत नवीन ज्ञान, शिक्षा, तार्किकता को ग्रहण करना ही आधुनिकता है। भारतीय सन्दर्भ में आधुनिकता नवीन मूल्यों की एक ऐसी व्यवस्था है, जो पिछले तीन सौ वर्षों से पश्चिमी राष्ट्रों के विकास से सम्बन्धित रही है। आधुनिकता स्थानीय बन्धनों से सम्बन्धित न होकर विश्वव्यापी मनोवृत्ति से प्रभावित होती है। अतार्किक विचारों से मुक्त होकर तार्किक विचारों को विकसित करती है प्रथा तथा प्राथमिक सम्बन्धों के आधार पर द्वैतीयक सम्बन्धों प्रदत्त पदों के स्थान पर अर्जित पदों एवं आर्थिक समृद्धि, मानवतावाद, समानतावाद, स्वतन्त्रता, धर्म निरपेक्षता, जनतन्त्रीकरण, तार्किकता, गतिशीलता आदि आधुनिकता की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं है। इसके अतिरिक्त भारतीय ग्रामीण समुदाय के प्रयोग पुराने कृषि यन्त्रों के स्थान पर नवीन प्रौद्योगिकी से नवीन यन्त्रों, खादों, पौष्टिक भोजन, उन्नत चिकित्सा सुविधाएं, संचार एवं आवागमन के साधनों में वृद्वि, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण का विकास एवं राष्ट्रीय आय में वृद्वि सुविधापूर्ण तथा विलासिता पूर्ण वस्तुओं का उत्पादन एवं उपभोग तथा नवीन आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना होती है। आधुनिकीकरण के क्रियान्वयन से परम्परागत मूल्य कमजोर हो जाते हैं और नवीन मूल्यों का विकास होता है। परम्परागत मूल्यों की अपेक्षा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा समानता, स्वतन्त्रता, नवीन सामाजिक व सांस्कृतिक संरचना कर्तव्यों व उत्तरदायित्वों के प्रति निष्ठा आदि नवीन सामाजिक मूल्यों का सूत्रपात होता है। मानसिक एवं सामाजिक गतिशीलता के कारण परम्परागत बन्धन ढ़ीले पड़ने लगते हैं। वे समाजीकरण तथा सामान्य समाजीकरण के नवीन प्रतिमानों को ग्रहण करके आधुनिकीकृत बनते चले जाते हैं। आधुनिकीकृत होने की यही प्रक्रिया आधुनिकीकरण है। व्यवसायों का अधिकतर कुशल एवं विशेषीकृत होना प्रदत्त पदों के स्थान पर अर्जित पदों का महत्व, राजनैतिक साझेदारी या मतदान व्यवहार में वृद्वि, संचार एवं आवागमन के साधनों का तीव्र विकास व उपयोग आदि अनेक विशेषताएं आधुनिकीकरण से जुड़ी हैं। आधुनिकीकरण एक लम्बी एवं जटिल प्रक्रिया है जिसका अन्तिम परिणाम सोंचने के तरीकों से है। व्यक्ति के विचार एंव अन्तः क्रियाएं देश के भीतर भिन्न

व्यक्तियों का निर्माण करती हैं जो कि आधुनिकीकरण की ही एक विशेषता है। गैर–पश्चिमी राष्ट्रों ने कुछ अवधारणाओं को अपनाना स्वीकार कर लिया है जो वस्तुतः पश्चिमी हैं परन्तु दृष्टिकोण में वे विश्वव्यापक हैं। जब इनका आन्तरीकरण प्रारम्भ होता है तो इससे आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को नवीन स्वरूप मिलता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विभाजन तीन भागों में हो सकता है।

1. अन्तः सम्बन्धों तथा कारणों की उपस्थिति जिनके द्वारा ज्ञान के लिए निरन्तर रूप से सुव्यवस्थित तथा नवीन खोज जारी रहती है।
2. उपकरणों तथा तरीकों में वृद्वि।
3. व्यक्तिगत तथा सामाजिक संरचना स्तर पर निरन्तर परिवर्तन को स्वीकार करने की इच्छाशक्ति।

आधुनिकीकरण द्वारा व्यक्ति तथा सामाजिक जीवन के सभी पक्षों में सुधार दृष्टिकोण तथा उन्नति की सम्भावनाओं में विश्वास आदि परिवर्तन आते हैं। व्यक्ति में स्वयं को बदलने की जागरूकता होनी चाहिए। पश्चिमी समाजों की प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी को अपना लेना ही आधुनिकीकरण नही है बल्कि यह तो आधुनिक बनने की इच्छा मात्र है।

^MCy0 th0 fLeFk^ ने *ekMUkkbt'ku vkQ , VhMh'kuy lklkbVh* में लिखा है। कि आधुनिकीकरण कोई उद्देश्य नही बल्कि प्रकिया है यह कोई अपनायी जाने वाली वस्तु नही है बल्कि उसमे सम्मिलित होना है आधुनिकीकरण मस्तिष्क व्यक्ति तथा समाज के गणवेषणात्मक तथा आविष्कृत धारणाओं का विकास है जो नवीन तकनीकी तथा मशीनों के प्रयोगों को स्वीकार करते हैं तथा सामाजिक सम्बन्धों के नवीन स्वरूपों की आकांक्षा करते है। केवल आधुनिक तकनीकी के बल पर ही कोई राष्ट्र आधुनिक नही हो जाता है बल्कि तकनीकी उन्हें जीवन के तरीके प्रदान करती है जिन्हे स्वीकार कर लेने से ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ होता है।

भारतीय समाज में भिन्न–भिन्न प्रकार से उन्नति हो रही है। लोगों के पास कम समय में अधिक कार्य करने की क्षमता है। भारतीय समाज का स्तर अन्य देशों से कम नही है। भारतीय समाज एक विशाल ख्याति प्राप्त समाज है। इसमे कई वैज्ञानिकों ने अपने अलग अलग प्रयोग करके नई वस्तुओं का अविष्कार किया है। जिससे देश में काफी लाभ हुआ है। आज के युग में आधुनिकीकरण का प्रभाव युवाओं में अधिक देखने को मिलता है। शिक्षा के स्तर में भी काफी सुधार हुआ है। जहॉ बोर्ड पर लिखकर शिक्षक अपने शिष्यों को पढ़ाया करते थे वहीं आज कम्प्यूटर का प्रयोग होने लगा है। जिससे छात्रों को काफी सुविधा हो गयी है। वे किसी भी समय इसका प्रयोग करके अध्ययन कर सकते हैं कम्प्यूटर के माध्यम से ज्ञान का विकास भी काफी हो जाता है। कोई भी समाज न तो पूर्णतया परम्परागत है और न ही पूर्णतया गतिशील है। स्थिरता एवं गतिशीलता की अवधारणा सापेक्षित है। परिवर्तन को या दूसरे शब्दों में आधुनिकता को समझाने के लिए परम्परा को भी जानना आवश्यक है परम्परा

के ज्ञान के आभाव में आधुनिकता को व्यक्त किया जा सकता है। क्योंकि जिन समाजों को आज हम आधुनिक कहते हैं उन समाजों में कुछ परम्पराएं होती हैं जो लोगों के व्यवहारों का निर्देशन करती हैं। परम्परगत का अर्थ है पुरानी पीढ़ी या पूर्वजों के व्यवहारों के अनुकरण की निरन्तरता अर्थात् परम्परा समाज की निरन्तरता का द्योतक है अर्थात् ऐसा परिवर्तन जो अच्छाई के लिए हो। परम्परा समाज की निरन्तरता को व्यक्त करती है जबकि आधुनिकता परितवर्तन को इंगित करती है। परम्परा या निरन्तरता प्रत्येक समाज की अन्तर्निहित विशेषताएं हैं। इस निरन्तरता को निर्देशन की आवश्यकता होती है जिससे समाज घुटन एवं कुष्ठाग्रस्त न हो सके। यह निर्देशन आधुनिकता से प्राप्त होता है इसलिए आधुनिकता एवं परम्परा एक दूसरे के विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक हैं। सूक्ष्म रूप से व्यक्तियों में परिवर्तन घटित होते हैं। व्यक्ति एवं समाज का परिवर्तन परस्पर अनुषांगिक है। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन व्यक्ति में भी परिवर्तन उत्पन्न कर देता है। इसी प्रकार बहुसंख्यकीय व्यक्तिगत परिवर्तनों की समष्टि व्यवस्था स्तरीय परिवर्तन का रूप धारण का सकती है। व्यक्ति में आधुनिकीकरण के प्रतिपक्ष के रूप में सामाजिक स्तर का विकास होता है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति परम्परागत जीवन पद्धति का परिवर्तन एक अपेक्षाकृत अधिक जटिल विकसित तथा तीव्र गति से परितर्वनशील जीवनशैली के रूप में अनुभव कराता है।

आधुनिकीकरण का मूल्यांकन सदैव सापेक्ष रूप से किया जाता है। इस प्रकार भारत पश्चिम के कतिपय देशों से, विशेषकर आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में कम आधुनिक हो सकता है। परन्तु यह तीस या पचास वर्ष पूर्व जितना आधुनिक था उसकी अपेक्षाकृत आज यह निश्चय ही अधिक आधुनिक है। यह मात्र इसलिए नही कि यहाँ कतिपय अधिक आधुनिक संयन्त्रों की स्थापना की गई है अपितु इस कारण भी कि यहाँ जो कुछ आज है तथा जो भावी क्षमताएं है वे व्यापक हैं। इन क्षमताओं के प्रयोग का दृढ़ निश्चय भी यहाँ विद्यमान है। भारत का विशिष्ट वर्ग अनेक देशों के श्रेष्ठजनो से अधिक परिष्कृत है। जो पर्यावरण आज यहॉ व्याप्त है वह अधिकांशतः इसलिए है कि यहाँ का समाज वस्तुतः कदाचित अचेतन मन से अथवा परम्परा के कारण अथवा अविस्थिति के परिणामस्वरूप इसी रूप से अनुरक्षित रखने में रूचि रखता है। इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य में भी भारत जितना अनुभव करता है उससे कहीं अधिक आधुनिक है।

^*vkb lu VkM*^ ने कहा है कि भारतीय समाज की विलक्षण विशिष्टताओं ने प्रारम्भिक चरणों में गम्भीर विभेद उत्पन्न नही किया है अर्थात सांस्कृतिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं के मध्य पर्याप्त स्वतन्त्रता इन्द्रियगोचक हो सकती थी।

भारत समाज के अन्तर संरचनात्मक स्वायत्तता ने इसकी संरचना में किसी भारी विभाजन के बिना आधुनिक बनाने वाली नवीनताओं को आत्मसात करने की सुविधा प्रदान की है। आधुनिकता का विकास एक ऐसी उपसंरचना तथा उपसंस्कृति के रूप में हुआ जिसका जीवन के समाप्त क्षेत्रों में व्यापक प्रसार नही हुआ। *ik0 flg* के विचारानुसार सरंचनात्मक

स्वायत्तता कुछ, सीमा तक परिवर्तनो के आघात शोषक की भांति कार्य करती है। परन्तु *ik0 flg* का विश्वास है कि जैसे–जैसे आधुनिकीकरण की खण्डीय प्रकृति सर्वदिकाच्छादी होती जाती है। संरचनात्मक स्वायत्तता की प्रसांगिकता समाप्त हो जाती है तथा वह परिवर्तन के लिए एक कुचालक के रूप में कार्य करने लगती है राजनीतिक व्यवस्था के परिवर्तन आंतरिक संरचनाओं पर आघात करने लगते है। इसके अतिरिक्त यह सम्मिलित रूप से समग्र सांस्कृतिक व्यवस्था के लिए गम्भीर तनाव उत्पन्न करते हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में विधान भारी परिवर्तनों को उत्पन्न करने में सहायक होती है। यह विधान परम्परा के आधार पर पूर्वजों के समय से चली आ रही सामाजिक असमानता तथा शोषण के उत्पादन एवं समाज के समस्त सदस्यों को संवैधानिक विशेषधिकारों एव प्रजातान्त्रिक अधिकार को प्रदान करने के उद्देश्य से निर्मित किये जाते हैं। पारम्परिक संरचनाएं तथा निष्ठाएं ऐसे उद्देश्यों के लिए संघटित की जाती है जो फलतः आधुनिक होते हैं तथा प्रतिवाद आन्दोलनों पर वर्तमान बल दिया जाता है फिर भी इस प्रक्रिया में परम्परा का भी पुनर्बलन प्राप्त होता है। भारतीय समुदाय में आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में 'गुन्नार मिरडाल' भी अपने विचारों को कुछ इस तरह ही व्यक्त करते हैं। भारत तथा अन्य एशियाई देशों में राष्ट्रीयता तथा प्रजातान्त्रिक संस्थाओ का विकास संरचनात्मक रूप में विषमता के साथ हुआ है। आर्थिक विकास में मंदगति तथा संस्थागत परिवर्तनों में मंदतर प्रगति भी दृष्टिगोचक होती है। *xUukj fejMky* ने विशेष रूप से यह दृढ़मत व्यक्त किया है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत की नरम राज्य नीति ने समाज की संस्थागत संरचना में आधारभूत परिवर्तनों के अंतर्वेशन से भारतीय नेताओं को रोंक दिया। परिणामतः समाज में असमतावादी सरंचना का विकास एवं सुदृढ़ीकरण होता रहा है। सुधार की नीतियों की शाब्दिक अभिव्यक्ति यहाँ तक कि उनके अधिनियम तथा उनके कार्यान्वयन के मध्य एक दीर्ध अन्तराल का विकास हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति के विकेन्द्रीकरण के कारण नगण्य धनिकतन्त्र के हाथों में शक्ति का केन्द्रियकरण हो गया। देश का नेतृत्व पूर्णरूपेण यथार्थ आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन के विरोधियों में निहित हो गया। भारत तथा अन्य एशियाई देशों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से चरमोत्कर्ष की ओर अग्रसर है अतः इन देशों के लिए युक्तियुक्त चयन हेतु समय सीमित है। क्रमिकवादी प्रतिमान के लिए कोई क्षेत्र अनुज्ञेय नही है। द्वितीयतः एक दीर्घ परिवर्तन का तीव्रगामी सूत्रपात एक क्रमिक लघु परिवर्तन की पहल से अधिक सुगम है। ऐसे दीर्घ द्रुतगामी परिवर्तनों के लिए भारतीय समाज की सामाजिक तथा संस्थागत स्थितियां प्रमुख क्षेत्र प्रस्तुत करती हैं। एक पारम्परिक समाज के स्वतन्त्र मूल्य एक आधुनिक समाज के स्वतन्त्र मूल्यों से भिन्न होते हैं परन्तु स्वतन्त्रता मूल्यों को सहायक मूल्यों में रूपान्तरित किये बिना उनकी अप्रासंगिकता का निरूपण नही किया जा सकता। एक परम्परागत समाज में समस्याएं तथा जीवन एवं कार्य के प्रति अभिवृत्तियॉ तात्विक रूप से अपनी स्वतन्त्रता के लिए महत्वपूर्ण होती है परन्तु एक आधुनिक समाज के स्वतन्त्र मूल्यों की अपेक्षा परम्परागत समाज के स्वतन्त्रता मूल्यों की महत्वहीनता का निरूपण

आवश्यक है। यह लोगों के परम्परागत मूल्यों के परित्याग एंव आधुनिक मूल्यों के अंगीकरण हेतु प्रेरित में सहायक होगी।

भारतीय आधुनिकीकरण की प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न तनाव परिवर्तन की योजना में और अधिक सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता की ओर हमारा ध्यान निर्दिष्ट करते हैं। इसके लिए नीति में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता होगी। आधुनिकीकरण के लिए असमन्वित संस्थागत सुधारों एंव आर्थिक उपायों के परिणामस्वरूप व्यवस्था में अनेक स्थल बिन्दुओं पर विसंगतियां उत्पन्न हो जाती हैं। आधुनिकीकरण की ओर प्रजातान्त्रिक संक्रमण में जाति, भाषा, क्षेत्र, संस्कृति तथा सामाजिक समस्याओं पर आधारित प्रतिवादात्मक आन्दोलन चाहे वे परोक्ष हों अथवा प्रत्यक्ष अपरिहार्य हैं। इसलिए *ik0 ,l0lh0 nc* का कथन है कि वर्तमान में अधिकांश विकासशील देशों की भांति भारत अस्पष्ट प्रतिरूपों एवं लक्ष्यों द्वारा अभिलक्षित है। आधुनिकता की ओर अग्रसर विशिष्ट वर्ग के लिए एक सूक्ष्म स्तर का प्रभुत्व अब भी छाया हुआ है। परन्तु परम्परा एवं रूढ़िवादिता की शक्तियाँ मृत एवं महत्वहीन नही हुई हैं। जब विकास की योजना असफल हो जाती है तो रूढ़िवादिता का आग्रह आकर्षक हो जाता है। परन्तु परम्परागत आदर्शों एवं प्रतिमानों की शाब्दिक सेवा भले ही की जाए आधुनिकीकरण के लक्ष्यों को प्रतीयमानतः सामान्य मान्यता प्राप्त है। परन्तु पारम्परिक तत्वों के संरक्षण के विषय में कोई मतैक्य नही है। साथ ही साथ आर्थिक विकास तथा प्रौद्योगिकी परिवर्तनों के सामाजिक मूल्यों का निर्धारण नही किया जा सका।

संचार एवं परिवहन के आधुनिक साधनों का प्रयोग कर्मकाण्ड तथा धार्मिक वर्गों तथा उनके कार्यकलापों को सामाजिक सहभागिता हेतु प्रसारण में किया जाता है। इसके अतिरिक्त भारत में आधुनिकीकरण के उत्तर औपनिवेशिक चरण में सरंचनात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया के समयान्तराल में विसंगतियां दिखाई दीं। जाति, परिवार, ग्राम, समुदाय आदि सूक्ष्म संरचनओं ने एक सीमा तथा अपने पारम्परिक संलक्षणों को प्रतिधारित कर रखा है। जाति–व्यवस्था ने आधुनिक संस्थाओं, प्रजातान्त्रिक, सहभागिता, राजनैतिक दल संगठन तथा व्यवसायिक संघवाद इत्यादि के अंगीकरण हेतु अप्रत्याशित नम्यता तथा गर्भित अंतः शक्ति प्रदर्शित की हैं औधोगिकीकरण के वर्षों के प्रयास के पश्चात् भी भारत एक निम्न जीवन स्तरीय ग्रामीण–कृषक बाहुल्य समाज बना हुआ है।

इस प्रकार संरचनात्मक विंसंगतियों को भारत के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में विखण्ड के सम्भावित स्त्रोत के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। ये विसंगतिया नागरिक संस्कृति तथा शिक्षा के प्रसार के बिना प्रजातन्त्रीकरण सर्वमुक्तवादी प्रतिमानों के प्रतिबद्धता विहीन अधिकारी तन्त्र की स्थापना आनुपातिक साधन सम्पन्नता के बिना संचार माध्यमो की सहभागिता यातायात के साधनों तथा जन आकांक्षाओं में अभिवृद्धि आदि के रूप में प्रकट होती है। सामाजिक संरचना में प्रसारण तथा एक सामाजिक नीति के रूप में क्रियान्वित किये बिना विवरणात्मक न्याय तथा कल्याणकारी आदर्श की शाब्दिक अभिव्यक्ति, औद्योगिकीकरण के

आभाव में अति नगरीकरण एक अंततः स्तर विन्यास में सार्थक परिवर्तन के बिना आधुनिकीकरण भी घटित हो सकते हैं।

1. <u>*leL;k dk dFku*</u> :– उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने ग्रामीण समुदाय पर आधुनिकीकरण का प्रभाव (हरदोई जनपद के अहिरोरी विकासखण्ड के ग्रामों पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन) विषय को शोध का विषय बनाया है।

2. <u>*'kCnk dk ifjHkk"khdj.k*</u>

- <u>*xzkeh.k*</u> %& एक ग्रामीण क्षेत्र वह है, जहां लोग किसी प्राथमिक उद्योग में लगे हों अर्थात् प्रकृति के सहयोग से वे वस्तुओं का प्रथमतः उत्पादन करते है।

K.N. Srivastava:- What"s Rural India, March&April 1961, P 86

- <u>*lenk;*</u> %& समुदाय मनुष्यों का ऐसा समूह है जो एक भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता है। जिनमें 'हम की भावना' होती है तथा जिनका एक सामान्य जीवन होता है।

- <u>*xzkeh.k lenk;*</u> %& ग्रामीण समुदाय ऐसे समुदाय हैं जो प्रकृति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है जिनका एक निश्चित स्थान है, जिनकी जीविका प्रकृति से प्रथमबार उत्पन्न हुई वस्तुओं से पूरी की जाती है। प्राथमिक सम्बन्धों में अनौपचारिकता और समानता पायी जाती है। भारतीय ग्रामीण समुदाय की संरचनात्मक विशेषताओं और परिवर्तन के अध्ययन से सम्बन्धित पद्धतिशास्त्रीय और अवधारणात्मक समस्याओं के स्पष्टीकरण के लिए ग्रामीण समुदाय से सम्बन्धित अध्ययनों का विश्लेषण आवश्यक है इन अध्ययनों के द्वारा केवल भारतीय ग्रामीण समुदाय के स्थानीय सांस्कृतिक और वृहद संस्कृति की अन्तःक्रिया तथा परम्परागत संरचनात्मक विशेषताओं का ही नही बोध होता है बल्कि परिवर्तन की उन आन्तरिक और वाह्य शक्तियों के प्रभावों का भी आभास होता है। जिनके कारण आधुनिक भारतीय ग्रामीण समुदाय एक नवीन और परिवर्तित स्वरूप को ग्रहण कर रहा है।

- <u>*vkLdj ybZl*</u> :– न उत्तर प्रदेश के रामपुर गॉव में अध्ययन द्वारा यह पाया गया कि गॉव के ब्राह्मण और जाट जो कि उच्च जाति के सदस्य हैं, उनके संयुक्त परिवारों की संख्या अधिक पायी गई। जबकि निम्न जाति के भंगी व अन्य निम्न जातियों में संयुक्त परिवारों की संख्या कम पायी गयी।

- <u>*olq*</u> %& *d* पश्चिमी बंगाल के वरद्धान जिले के कंचनपुर गॉव के अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि संयुक्त परिवार निम्न जाति की तुलना में उच्च जाति में अधिक पाये गये हैं।

- <u>*d0,l0dikfM;k*</u> %& नौसारी के अध्ययन में यह पाया कि गैर कृषक जातियों तुलना में कृषक जातियों में संयुक्त परिवार अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

- *lgk;* %& के अध्ययन से विदित होता है कि बिहार के कंचनपुर गॉव के चमार जाति के सदस्य निकटवर्ती नगर को स्थानान्तरित हो गये हैं और उन्होने मुर्गी पालन, स्वीपर या स्कूल अध्यापक जैसे सफेदपोश धन्धों को अपना लिया है।

- *ioZFkEek* :– इन्होने अपने अध्ययन में यह बताया है कि मैसूर के मदिका जाति के लोगों ने अपने परम्परागत चमड़े के व्यवसाय को छोड़कर कृषि मजदूरी को अपना लिया है।

- *Mkboj* :–इन्होंने अपने अध्ययन में यह बताया कि ब्राह्मण और अनुसूचित जाति के व्यक्ति अपने परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर नवीन व्यवसायों को ग्रहण कर रहे हैं।

- *oyh* %& वेली के अध्ययन से यह विदित होता है कि बिसीपाड़ा की शराब निकालने वाली वोट जाति का धन और राजनीतिक प्रभुत्व की प्राप्ति के साथ–साथ उच्च जाति की प्रथाओं, संस्कारों और जीवनशैली को अपनाना प्रारम्भ कर दिया है।

- *iVy* %& पटेल ने अपने अध्ययन में यह बताया कि गुजरात की जूनी अदरी गाँव के 'बरैया' जो कि क्षत्रिय जाति की उपशाखा है, ने कृषि से सम्पन्न होने के पश्चात् उच्चजाति के संस्कारों, प्रथाओं, भोजन के तरीकों और घर की सजावट को अपनाना प्रारम्भ कर दिया है। गाँव के ब्राह्मण और पट्टीदार उनके लिए संदर्भ समूह बन गये हैं।

- *eUpj* %& इन्होंने यह बताया कि यह सभी परिवर्तन जीवन तथा व्यक्ति विशेष रूप से अपेक्षाकृत अधिक सम्बन्धित हैं तथा परिवारिक जीवन में अनेक प्रतिबन्ध अभी भी बने हुए हैं। उदाहरण के लिए तमिलनाडु के एक गाँव के ब्राह्मण खान–पान सम्बन्धी निषेधों का पालन अपने घर में करते हैं। परन्तु गाँव की चाय की दुकान पर ब्राह्मण और गैर ब्राह्मण में कोई अन्तर नही किया जाता।

3. *vk/kqfudhdj.k*

आधुनिकीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसमे व्यक्ति अथवा समाज परम्परागत अथवा अर्द्धपरम्परागत स्थिति से निकल कर इच्छुक तकनीकी को पाना चाहता है। जो सामाजिक संरचना, मूल्य, प्रेरणा, संवेग और प्रतिमान से सम्बन्धित है।

बीसवीं सदी के विचारकों ने 'वृहद समाज का युग', नए–नए राष्ट्रों के प्रादुर्भाव का युग, तथा मनोवैज्ञानिक क्रान्ति के युग से सम्बोधित किया है। इन शब्दों से अधिक उपयुक्त एक शब्द है जिससे 20वीं सदी को व्यक्त किया जा सकता है वह है आधुनिकीकरण का युग। आज सभी समाज अपने को आधुनिकीकृत करने के लिए प्रयत्नशील हैं। शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता, नगरीकरण तथा औद्योगिकीकरण की प्रक्रियाएं इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक हैं। अब तक विभिन्न विद्वानो ने आधुनिकीकरण पर बहुत कुछ लिखा है और इसे अनेक रूपों में परिभाषित किया है।

• *efj;u t0 yoh* :– लेवी ने आधुनिकीकरण को प्रौद्योगिक वृद्वि के रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने शक्ति के जड़ स्त्रोतों जैसे पेट्रोल, डीजल, जल, विद्युत तथा अणु शक्ति और यन्त्रों के प्रयोग को आाधुनिकीकरण के आधार के रूप में माना है। किसी समाज विशेष को कितना अधिक आधुनिक कहा जाएगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहां जड़ शक्ति तथा यन्त्रों का प्रयोग कितना हुआ है।

• *Mk0 ;kxUn flag%&* ने बताया है कि साधारणतः आधुनिक होने का अर्थ फैशनेबल से लिया जाता है। वे आधुनिकीकरण को एक सांस्कृतिक प्रयत्न मानते है जिसमें तार्किक अभिवृत्ति, सार्वभौम दृष्टिकोण परानुभूति वैज्ञानिक विश्व दृष्टि मानवता प्रौद्योगिकी प्रगति आदि सम्मिलित हैं, डॉ0 सिंह आधुनिकीकरण पर किसी एक ही जातीय समूह या सांस्कृतिक समूह का स्वायित्व नही मानते वरन् सम्पूर्ण मानव समाज का अधिकार मानते हैं।

• *Mfu;y yuj%&* ने आधुनिकीकरण का पश्चिमी मॉडल स्वीकार किया है। वे आधुनिकीकरण में निहित निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख करते हैं।

a. बढ़ता हुआ नगरीकरण

b. बढ़ती हुई साक्षरता

c. बढ़ती हुई साक्षरता विभिन्न साधनों जैसे समाचार पत्रों, पुस्तकों, रेडियो आदि के प्रयोग द्वारा शिक्षित लोगों के अर्थपूर्ण विचार विनिमय में सहभागिता को बढ़ाती है।

d. इन सभी से मनुष्य की क्षमता में वृद्धि होती है। राष्ट्र का आर्थिक लाभ होता है जो प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाने में योग देता है।

e. यह राजनैतिक जीवन की विशेषताओं को उन्नत करने में सहायता देता है।

लर्नर उपर्युक्त विशेषताओं को शक्ति तरूणाई, निपुणता तथा तार्किकता के रूप में व्यक्त करते हैं। वे आधुनिकीकरण को प्रमुख मस्तिष्क की एक स्थिति के रूप में स्वीकार करते हैं। प्रगति की अपेक्षा वृद्वि की ओर झुकाव तथा परिवर्तन के अनुरूप अपने को ढ़ालने की तत्परता के रूप में मानते हैं। परानुभूति भी आधुनिकता का एक मुख्य तत्व है, जिसमें अन्य लोगों के सुख–दुख में भाग लेने और संकट के समय उनको सहायता देने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

• *Mk0 jkt d".k* ने आधुनिकीकरण एवं आधुनिकता में अन्तर किया है। इन्होंने आधुनिकता को आधुनिकीकरण से अधिक व्यापक माना है। इनके अनुसार आधुनिकीकरण एक ऐसी सभ्यता की ओर इंगित करता है जिसमे साक्षरता तथा नगरीकरण का उच्च स्तर तथा साथ ही लम्बवत् और भौगोलिक गतिशीलता, प्रतिव्यक्ति उच्च आय और प्रारम्भिक स्तर से उच्च स्तर की अर्थव्यवस्था जो कमी के स्तर (उत्पादन बिन्दु) के परे जा चुकी हों, समाविष्ट हैं। दूसरी ओर आधुनिकता एक ऐसी संस्कृति को बताती है। जिसकी विशेषताओं का निर्धारण तार्किकता व्यापक रूप से उदार दृष्टिकोण मतों की विविधता तथा निर्णय लेने के विभिन्न केन्द्र, अनुभव

क्षेत्रों को स्वायत्तता, धर्म निरपेक्ष तथा आचार शास्त्र तथा व्यक्ति के निजी संसार के प्रति आदर के रूप में होता है।

• *lh-b-Cyd* ने आधुनिकीकरण को ऐतिहासिक रूप में स्वीकार किया है और इसे परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया माना है जो पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में सत्रहवीं सदी में विकसित सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्थाओं से बीसवीं सदी के अमेरिका तथा यूरोप आदि देशों की ओर अग्रसर होती है। आधुनिकता और आधुनिकीकरण एक ऐसी मनोवृत्ति का परिणाम है जिसमें यह विश्वास किया जाता है कि समाज को बदला जा सकता है और बदला जाना चाहिए तथा परिवर्तन वांछनीय है। आधुनिकता में व्यक्ति की संस्थाओं के बदलते हुए कार्यों के अनुरूप समायोजन करना होता है। इससे व्यक्ति के ज्ञान में वृद्वि होती है। जिसके परिणाम स्वरूप वह पर्यावरण पर नियन्त्रण प्राप्त कर लेता है।
vkbu LVM ने विभिन्न क्षेत्रो में आधुनिकीकरण को निम्न प्रकार से व्यक्त किया है।

d- vkfFkd {k= e :– प्रौद्योगिकी का उच्च स्तर।

[k- jktufrd {k= e %& समूह में शक्ति का प्रसार तथा सभी वयस्कों को शक्ति प्रदान करना एवं संचार के साधनों द्वारा प्रजातन्त्र में भाग लेना।
x- lkLdfrd {k= e %& विभिन्न समाजों के साथ अनुकूलन की क्षमता में वृद्वि तथा दूसरे लोगों को परिस्थितियों के प्रति परानुभूति में वृद्वि।
?k- lajpuk d {k= e %& सभी संगठनों के आकार का बढ़ना, उनमें जटिलता एवं विशेषकरण की दृष्टि में वृद्धि।
M- ifjfLFkfrdh; {k= e %& नगरीकरण की वृद्वि।

• *Mk0 ,l-lh- nqcs* ने भारत के सन्दर्भ में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को दर्शाने का प्रयास किया है। डॉ0 दुबे आधुनिकीकरण को मूल्यों से मुक्त मानते है। वे इसके लिए कोई निश्चित मॉडल या मार्ग भी नही मानते जैसा कि कुछ विद्वानों ने माना है। भारत में हमने राजनैतिक क्षेत्र में प्रजातन्त्र धर्मनिरपेक्षता तथा समाजवाद को अपनाया है तथा पश्चिम को मॉडल माना है वहीं हमने समतावादी समाज के लिए रूस और चीन को मॉडल माना है। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप व्यक्तियों में तर्क, परानुभूति, गतिशीलता एवं सहभागिता बढ़ती है। डॉ0 दुबे इसमे तीन बातों को सम्मिलित करते हैं –

1- मानव समस्याओं के हल के लिए जड़–शक्ति का प्रयोग।
2- ऐसा प्रयोग व्यक्तिगत रूप से न करके सामूहिक रूप से किया जाता है, परिणामस्वरूप जटिल संगठनों का निर्माण होता है।
3- इस प्रकार के जटिल संगठनों को चलाने के लिए व्यक्तिगत समान और संस्कृति में परिवर्तन लाना आवश्यक है। डॉ0 दुबे शिक्षा को आधुनिकीकरण का एक सशक्त साधन मानते

हैं, क्योंकि शिक्षा ज्ञान की वृद्वि करती है, मूल्यों तथा धारणाओं में परिवर्तन लाती है जो आधुनिकता के उद्देश्य तक पहुंचाने के लिए बहुत आवश्यक है।

• Mk0 ,e-,u- Jhfuokl ने आधुनिकीकरण के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। इनके अनुसार आधुनिकीकरण का अर्थ अधिकांशतः अच्छाई से लिया जाता है। किसी भी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क के कारण किसी गैर पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तन के लिए प्रचलित शब्द आधुनिकीकरण हैं। ये आधुनिकीकरण में निम्नलिखित बातों को सम्मिलित करते हैं, बढ़ा हुआ नगरीकरण, साक्षरता का प्रसार, प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि, वयस्क मताधिकार तथा तर्क का विकास।

Mk0 Jh fuokl ने आधुनिकीकरण के तीन प्रमुख क्षेत्र बताये हैं।

1. भौतिक संस्कृति का क्षेत्र (इसमें तकनीकी भी सम्मिलित की जाती है)।
2. समाजिक संस्थाओं का क्षेत्र ।
3. ज्ञान मूल्य मनोवृत्तियों का क्षेत्र।

उपरोक्त तीनो क्षेत्र भिन्न–भिन्न मालूम पड़ते हैं परन्तु वे परस्पर सम्बन्धित हैं एक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन दूसरे क्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

• ,-vkj-nlkbl %& आधुनिकीकरण का प्रयोग केबल सामाजिक क्षेत्र तक ही सीमित नही बल्कि जीवन के सभी पहलुओं तक विस्तृत मानते है।

• ckf)d {k= में आधुनिकीकरण का अर्थ तर्कशक्ति को बढ़ाना है। भौतिक व सामाजिक घटनाओं की तार्किक व्याख्या की जाती है। ईश्वर को आधार मानकर किसी भी घटना को स्वीकार नही किया जाता है। धर्म निरपेक्ष तार्किकता का ही परिणाम है, जिसके फलस्वरूप अलौकिक जगत के स्थान पर इस दुनिया का दृष्टिकोण पनपता है।

• lkekftd {k= e%&

¼v½- सामाजिक गतिशीलता बढ़ती है। पुरानी सामाजिक राजनैतिक तथा मनोवैज्ञानिक धारणाओं को तोड़कर व्यक्ति नये प्रकार के व्यवहार को अपनाने को प्रस्तुत होता है।

¼c½- lkekftd lajpuk e ifjorZu %& व्यक्ति के व्यवसायिक एवं राजनैतिक कार्यों में परिवर्तन आता है, प्रदत्त पदों के स्थान पर अर्जित पदों का महत्व बढ़ता है।

• jktuhfrd {k= e%&

¼v½- सार्वभौमिक सत्ता की वैद्यता अलौकिक शाक्ति से प्राप्त न होकर नागरिकों द्वारा प्राप्त होती है।

¼c½- राजनैतिक शक्ति का लोगों में वयस्क मताधिकार के आधार पर हस्तान्तरण।

¼l½- समाज की केन्द्रीय कानूनी प्रशासकीय तथा राजनैतिक संस्थाओं का विस्तार एंव प्रसार।

¼n½- प्रशासकों द्वारा जनता की भलाई की नीति अपनाना।

• *vkfFkd {k= e%&*

¼v½- उत्पादन, वितरण, यातायात तथा संचार आदि में पशु और मानव शक्ति के स्थान पर जड़ शक्ति का प्रयोग करना।

¼c½- आर्थिक क्रियाओं का परम्परागत स्वरूप से पृथक्करण।

¼l½- मशीन, तकनीकी एवं औजारों का प्रयोग।

¼n½- उच्च तकनीकी के प्रभाव के कारण उद्योग, व्यवसाय, व्यापार आदि में वृद्वि।

¼;½- आर्थिक कारणों में विशेषीकरण का बढ़ना साथ ही उत्पादन, उपभोग व बाजार में वृद्वि।

¼j½- अर्थव्यवस्था में उत्पादन तथा उपभोग में वृद्वि।

¼y½- बढ़ता हुआ औद्योगिकीकरण जिसे हम आर्थिक आधुनिकीकरण की मुख्य विशेषता कह सकते हैं।

परिस्थितिशास्त्रीय क्षेत्र में शहरीकरण की वृद्वि होती है।

• *lkaLd`frd {k= e%&*

¼v½- शिक्षा का विस्तार तथा विशेष प्रकार की शिक्षा देने वाली संस्थाओं में वृद्वि।

¼c½- नये सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विकास जो उन्नति व सुधार, योग्यता सुख अनुभव व क्षमता पर जोर दे।

¼l½- सभी प्रकार के समाजों के साथ समायोजन करने की धारणा का विकास रूचि का बढ़ना दूसरे लोगों के प्रति परानुभूति का बढ़ना दूसरों का सम्मान करना, ज्ञान व तकनीकी में विश्वास पैदा होना तथा व्यक्ति को उसके कार्य का प्रतिफल मिलना और मानवता वाद में विश्वास।

¼n½- समाज द्वारा ऐसी संस्थाओं और योग्यताओं का विकास करना जिससे कि लगातार बढ़ती हुई मांगों और समस्याओं में समायोजन किया जा सके।

• *dkuuy* ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तीन स्तरों का उल्लेख किया है –

¼v½- *fo'y"k.kkRed] rkfdZd rFkk vfo"dkjd nf"Vdks.k* %& इस स्तर के अन्तर्गत दृष्टिकोण तार्किक बनता है। प्रत्येक तथ्य को वैज्ञानिक आधार पर तय किया जाता है जैसे–उपकल्पना का निर्माण, अवलोकन, तथ्य संग्रह, वर्गीकरण तथा सामान्यकरण आदि स्तरों से ही सामाजिक तथ्यों को प्राप्त किया जाता है। इस स्तर की विवेचना का आधार वैज्ञानिक हो जाता है।

¼c½- *;U=ksa rFkk izfof/k;ksa dk foLrkj* %& अनुसंधान कार्य की सहायता से यन्त्रों तथा प्रविधियों में निरन्तर विचार होता है। यह इस दूसरे स्तर की प्रमुख विशेषता है। नयी–नयी मशीनों के आ जाने के कारण जीवन का ढ़ंग बदलता है। मनुष्य सभ्यता को अपना अनुगामी बनाता है। धार्मिक कृत्यों का प्रभाव कम होता है।

¼l½- Lkekftd <kp e ypd %& इस स्तर पर लोग मानसिक रूप से प्रत्येक परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं। सामाजिक सम्बन्धों का स्वरूप कठोर न होकर आवश्यकताओं के अनुरूप बदलता रहता है। इस प्रकार आधुनिकीकृत समाज की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

1- स्वास्थ्य में वृद्धि :– ऐसा चिकित्सा व्यवस्था तथा पौष्टिक आहार में प्रचुरता के कारण सम्भव हो पाता है।

2- कृषि कार्यों में मशीनों तथा रासायनिक खादों का प्रयोग किया जाता है

3- सामाजिक दूरी कम हो जाती है :– ऐसा मशीनों की गति बढ़ाकर सम्भव हो पाता है।

4- राजनैतिक दलों का संगठन।

5- मौखिक संचार व्यवस्था के स्थान पर लिखित तथा मशीनीकृत संचार व्यवस्था।

6- विभिन्न समुदायों में अन्तः अश्रितता।

7- गांवों से नगरों को निष्क्रमण।

8- रूपये के माध्यम से वस्तुओं का क्रय–विक्रय।

9- स्वतः आर्थिक विकास।

10- उपभोग सम्बन्धी आदतों में विजातीयता।

11- शिक्षा के लिए विशेषीकृत शिक्षण संस्थाएं।

12- प्रदत्त प्रस्थिति के स्थान पर अर्जित प्रस्थिति का महत्व। वैसे किन्ही–किन्ही समाजों में ये दोनो साथ–साथ चलते रहते हैं।

13- विशेषीकरण की महत्ता विशेषकर पेशागत दक्षता विशेषीकरण पर आधारित होता है।

14- उद्योगों में अवैयक्तिक सम्बन्धों की प्रधानता।

15- नौकरशाही का विकास।

16- हरित क्रान्ति को प्रोत्साहन।

ग्रामीण समुदायों को आधुनिकीकरण ने बहुत प्रभावित किया है इसका उदाहरण देते हुए डॉ0 एम0 एन0 श्रीनिवास ने कहा है कि ''भारत में फर्श पर बैठकर भोजन करने की परम्परा तथा भोजन बनाने समय स्त्रियों को कर्मकाण्ड की दृष्टि से पवित्र होना आवश्यक था क्योंकि परिवार के सदस्यों को देने से पहले भोजन पारिवारिक देवता को भोग लगाया जाता था। स्वच्छ वस्त्र पहनकर भोजन ग्रहण किया जाता था। अब बड़े–बड़े कस्बों और शहरों में शिक्षित और पश्चिमीकृत समूह अधिकाधिक मेजों पर खाना पसन्द करते हैं। शहरी क्षेत्रों में तो स्कूलों और दफ्तरों के समय से भोजन का समय निर्धारित होता है और घर की भोजन परोसने अथवा देखभाल करने वाली बड़ी–बूढ़ी स्त्री को छोड़कर परिवार के सभी लोग एक साथ खाने पर बैठते हैं।

संक्षेप में, शिक्षा ऊंची आमदनी और नगरीकरण से जीवनशैली का लौकिकीकरण होता है, संचार साधनों के विकास नगरीकरण और औद्योगिकीकरण में वृद्धि और दफ्तर कारखाने या सरकारी नौकरी से प्राप्त नगद आमदनी की प्रतिष्ठा ने संगोत्र समूहों को अपने जन्म के गाँवों और कस्बों से बाहर बिखरा दिया। इन्हीं कारणों से भारतीय परिवार व्यवस्था संयुक्त से बदल कर एकाकी हो गये और होते जा रहे हैं।